बी.एस.ओ.सी.-108 : आर्थिक समाजशास्त्र
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : **BASOH**
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-108**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -108 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के मध्य संबंध का परीक्षण कीजिए। आर्थिक समाजशास्त्र के विकास में शास्त्रीय समाजशास्त्रीय विचारकों के योगदान की विवेचना कीजिए। 20

2. पारस्परिकता (Reciprocity) तथा उपहार (Gift) की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए। सामाजिक विनिमय में इनके स्वरूपों, आयामों तथा समाजशास्त्रीय महत्त्व की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. आखेट एवं संग्रहकर्ता (Hunting and Gathering) समाजों की प्रमुख विशेषताओं तथा उनके आर्थिक संगठन की चर्चा कीजिए। 10

4. पशुपालक अर्थव्यवस्था (Pastoral Economy) की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए। 10

5. घरेलू उत्पादन प्रणाली (Domestic Mode of Production) की विशेषताओं तथा उसके महत्त्व की चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. औपचारिकतावाद (Formalism) एवं तात्त्विकवाद (Substantivism) 06

7. समाजवाद 06

8. वाशिंगटन सर्वसम्मति (Washington Consensus) 06

9. सामाजिक विकास 06

10. नया आर्थिक समाजशास्त्र (New Economic Sociology) 06

1. समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के मध्य संबंध का परीक्षण कीजिए। आर्थिक समाजशास्त्र के विकास में शास्त्रीय समाजशास्त्रीय विचारकों के योगदान की विवेचना कीजिए।

उत्तर—

समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को अलग-अलग तथा पूर्णतः स्वतंत्र व्यवस्थाएँ मानना कठिन है। अर्थव्यवस्था वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग से संबंधित है; किंतु ये क्रियाएँ परिवार, जाति, वर्ग, समुदाय, कानून, विश्वास और सत्ता-संबंधों के भीतर संचालित होती हैं। इसी परस्पर संबंध का व्यवस्थित अध्ययन आर्थिक समाजशास्त्र कहलाता है। इसका मूल प्रश्न है कि सामाजिक संरचना आर्थिक व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है और आर्थिक परिवर्तन सामाजिक जीवन को कैसे बदलता है।

समाज और अर्थव्यवस्था का संबंध। श्रम-विभाजन, संपत्ति के अधिकार, रोजगार, बाजार की पहुँच और संसाधनों का वितरण सामाजिक संस्थाओं द्वारा नियोजित होते हैं। परिवार में काम का लैंगिक विभाजन तय कर सकता है कि किसे वेतन वाला रोजगार मिलेगा तथा किसकी देखभाल संबंधी मेहनत अवैतनिक रहेगी। जाति और वर्ग शिक्षा, पूँजी तथा पेशे तक पहुँच में असमानता पैदा कर सकते हैं। वहीं नगरीकरण, औद्योगिकीकरण और प्रवासन से परिवार, निवास तथा सामुदायिक संबंध बदलते हैं। अतः आर्थिक संस्थाएँ सामाजिक संबंधों का परिणाम भी हैं और परिवर्तन का कारण भी।

संस्कृति और आर्थिक व्यवहार। संस्कृति में मूल्य, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, ज्ञान और नैतिक धारणाएँ शामिल हैं। उपहार देना, विवाह पर खर्च करना, बचत करना या लाभ कमाना केवल व्यक्तिगत उपयोगिता का गणित नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा, विश्वास और सामाजिक स्वीकृति से भी जुड़ा है। धार्मिक नैतिकता कार्य और संपत्ति के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती है। स्थानीय बाजारों में प्रतिष्ठा तथा ग्राहकों के साथ दीर्घकालीन संबंध कई बार लिखित अनुबंध जितने महत्त्वपूर्ण होते हैं। संस्कृति आर्थिक चुनावों को अर्थ प्रदान करती है, पर इसके भीतर विरोध और परिवर्तन की गुंजाइश भी रहती है।